Coins of Samundra Gupta

महाविजेता समुद्रगुप्त ने लगभग 40 वर्षों तक शासन किया। उसके राज्यकाल काल में विभिन्न प्रकार की मुद्रायें प्रचलित की गई। इस प्रकार समुद्रगुप्त ने निम्न प्रकार के सिक्कों का प्रचलन किया :-

1. ध्वजधारी प्रकार के सिक्के :-
2. दण्डधारी सिक्के
3. धनुर्धारी प्रकार
4. परशुधारी प्रकार
5. अश्वमेध प्रकार
6. व्याघ्रहिंसा प्रकार
7. वीणाधारी प्रकार

1. ध्वजधारी प्रकार :→ इस शैली की मुद्रायें समुद्रगुप्त की मुद्राओं में सर्वाधिक प्रचलित है। यह समुद्रगुप्त की प्रथम प्रकार की स्वर्णिम मुद्रा है और बयाना निधि 143 उपलब्ध हुए हैं। इस प्रकार की कुछ मुद्रायें ब्रिटिश संग्रहालय में 17, कलकत्ता संग्रहालय में 14, और लखनऊ संग्रहालय में 26 सिक्के अभी सुरक्षित हैं। इस प्रकार के सिक्के गुप्त साम्राज्य में सहारनपुर से कलकत्ता तक सर्वत्र पाये गए हैं। इन सिक्कों की तौल 10.5 ग्रेन और कुछ सिक्कों की तौल 122 ग्रेन है।

इस सिक्के के अग्रभाग में कोट पायजामा टोपी तथा आभूषण पहने राजा की खड़ी मूर्ति बनी है। बायें हाथ में गरुड़ध्वज तथा दाहिने हाथ में राजा अग्नि में आहुति डाल रहा है। इसके पृष्ठ भाग पर राजा प्रभामण्डल युक्त बायीं ओर खड़ा है। राजा की बाँह के नीचे समुद्र या समुद्रगुप्त लिखा है। मुद्रालेख ~~लिखा है~~

2. दण्डधारी सिक्के :→ दण्डधारी सिक्के कई प्रकार के मिले हैं कुछ सिक्कों में राजा बायीं ओर देख रहा है कहीं वह अर्द्धचन्द्र के साथ है। कहीं उसका उसका आकार छोटा है किसी सिक्के में राजा कटार लिये है तो कहीं उसका लेख बायीं ओर से ~~देख रहा है~~ आरम्भ होता है और कहीं से लेख दाहिनी ओर सीधी पंक्ति में जाता है। इस सिक्के के अग्रभाग पर राजा प्रभामण्डल युक्त बायीं ओर खड़ा है। वह टोपी कोट तथा पतलून पहने है। उसके कान में कुण्डल छाती पर हार और हाथ में कड़ा है। वाम हस्त से ध्वज लिये ~~खड़े~~ हुए है और दक्षिण हस्त में वेदी पर हवन डाल रहा है। वेदी के पृष्ठतल पर गरुड़ध्वज अंकित है। राजा के बाम

के नीचे समुद्र गुप्त लिखा है।

सिक्के के पृष्ठभाग पर प्रभामण्डल युक्त लक्ष्मी सिंहासन पर बैठी दर्शायी गयी है लक्ष्मी साड़ी, चोली, चादर, हार और भुजदण्ड आदि-आभूषण से सुशोभित दर्शायी गयी है। बांये कानुकोपिया तथा दाहिने हाथ में पाश धारण किये हुए है। उनका पैर चटाई पर स्थित है। मुद्रा लेख पर क्रमशः उत्कीर्ण है। इस प्रकार के कई उपप्रकार के सिक्के मिले है।

3. धनुर्धारी प्रकार :— धनुर्धारी प्रकार के सिक्के भी दण्डधारी सिक्के के परिवर्तित रूप है। ऐसा लगता है कि इन सिक्को पर भी राजा की आकृतियां अंकित है उनपर कुषाणों का प्रभाव है जो कि आगे चलकर के भारतीय रूप में परिवर्तित होता गया है। धनुर्धारी प्रकार के सिक्के इसी ढंग का है। यह मुद्रायें 110 से 120 ग्रेन तौल की है। इन्हें प्राचीन भरतपुर रियासत के बयाना स्थान से तथा उत्तरप्रदेश और बिहार प्रान्तों से मिली है.

मुद्रा के पृष्ठभाग सिंहासनारूढ लक्ष्मी बैठी है। उसके बाये हाथ में कानुकोपिया और दाहिने हाथ में पाश है तथा मुद्रालेख "अप्रतिरथः" उत्कीर्ण है। यहाँ पर लक्ष्मी-ध्वजधारी-कोटि की भाँति बैठी हुई दिखाई देती है। इस प्रकार के सिक्के में मौलिकता अधिक प्रतिबिंबित होती है तथा अत्यन्त लोकप्रिय होने के कारण गुप्तकालीन राजागण इसे अधिकांश समय तक तैयार करते रहे। समुद्रगुप्त की अपेक्षा चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने इस सिक्का को प्रचलित किया जिसमें भारतीय स्पष्ट रूप से झलकती हुई प्रदर्शित होती है।

4. परशुधारी प्रकार :→ परशुधारी सिक्के दो वर्ग में मिलते है। एक वर्ग में बाये भाग में राजा तथा दाहिने भाग में वामन तथा दूसरे वर्ग में इसका उल्टा है। इस वर्ग के सिक्के दुष्प्राप्य है किन्तु पहले वर्ग के सिक्कों का कई उप-प्रकार मिलता है। इस सिक्के के उप-प्रकार में " समुद्र " बाये हाथ के नीचे लिखा है। इस प्रकार के मुद्रा का तौल 178 ग्रेन तक है।

यह मुद्रा पूर्णतः भारतीय अनुकरण है। धनुष, परशु, अर्धचन्द्र युक्त ध्वज तथा वेदी के स्थान पर बाण आदि का चित्रण पूर्णतः अनुकरण मात्र है।

समुद्रगुप्त के अभिलेखों से भी इस मुद्रा का साक्ष्य की पुष्टि होती है। सम्भवतः उसने इस सिक्के को किसी विजय के प्रमाण में तथा अपनी "कृतान्त परशुः" विरुद को सार्थक सिद्ध करने के लिए ही प्रचलित करवाया था। अल्टेकर के अनुसार "कृतान्त परशु" कहने में सम्भवतः वेदान्त सत्य की ओर आकृष्ट करने का अभिप्राय था जिसके कारण उसे 'कृतान्त परशु' कह कर अभिहित राजाओं का विजेता बताया गया है। डा० मुखर्जी इस सिक्के के निर्माण काल को उसके राज्य के परवर्ती युग में होना स्वीकार करते हैं। सिक्के के अग्रभाग पर उत्कीर्ण राजा की आकृति में यह विदित होता है कि वह किसी युद्ध का निरीक्षण कर रहा है। संक्षेप में ये सिक्के तत्कालीन मुद्रा कला को इंगित करते हैं।

5. अश्वमेध प्रकार :—

प्राचीन भारतीय मुद्रा कला में अश्वमेध सिक्के सर्वोत्तम उदाहरण कहे जा सकते हैं। वैसे ये सिक्के विपुल संख्या में तैयार किये गये होंगे किन्तु थोड़े ही सिक्के प्राप्त हुए हैं। इस मुद्रा की तौल 112.5 ग्रेन से 119 ग्रेन है बिहार और उत्तर प्रदेश में बहुत संख्या में यह मुद्रा मिली है। इस सिक्के के अग्रभाग पर बायीं ओर अश्व-यूप के सामने खड़ा है। जीन रहित घोड़े के गले में पट्टा है उसकी पीठ पर लम्बा तिकोना पट्टा है। कुछ मुद्राओं पर नीचे एक छोटी बेदी घोड़े के नीचे "सि" अक्षर उत्कीर्ण है। घोड़ा सुन्दर और सजीव है। मोतियों की माला से उसे अलंकृत किया गया है। उपजाति छंद में "राजाधिराज" उत्कीर्ण है। अर्थात जिसने पृथ्वी को जीतकर, अश्वमेध किया है और जो अपने अपूर्व पराक्रम से स्वर्ग प्राप्त करता है।

पृष्ठभाग पर सम्भवतः राजमहिषी खड़ी है वह शरीर पर साड़ी चोली कुण्डल हार बाये तथा कंकण धारण किये है। दाहिने हाथ में भुजदण्ड तथा कन्धे के दाहिनी ओर चँवर लिये बाये हाथ में लिये नुकीला भाला लिए खड़ी है। बाईं ओर से बँधा एक बलिभाला है और भाला तथा पैरों के ~~बीच~~ चारों ओर एक शृंखला है तथा कुछ मुद्राओं में पैरों के पास तम्बी दिखाई पड़ती है, ~~को~~ मुद्रालेख 'अश्वमेध पराक्रमः' उत्कीर्ण है।

6. व्याघ्र निहन्ता प्रकार :→ ये सिक्के गालद समुद्रगुप्त

के अन्तिम काल में तैयार किये गए क्योंकि इनसे मुद्रा-
निर्माण की कुशलता का पूर्ण रूप से परिचय मिलता है।
सम्भवतः इसी सिक्के के अनुकरण पर चन्द्रगुप्त II ने सिंह-
निहंता प्रकार के बनवाये। इस प्रकार की मुद्रा अल्प संख्या
में मिली है। तौल 111 ग्रेन से 117 ग्रेन तक है।

इस मुद्रा के अग्रभाग में राजा भारतीय
वेशभूषा (पगड़ी, नेकर, तथा धोती पहने) में आभूषण धारण
किये, हाथ में धनुष बाण लिए हुए व्याघ्र पर ऊपरता-
तथा उस पैर से कुचलता हुआ दिखाई गयी है। बाये हाथ
के नीचे "व्याघ्र पराक्रमः" लिखा है। राजा दाहिने-
हाथ में धनुष तथा बाये हाथ के प्रत्यंचा कान तक खींचते
हुए दर्शाया गया है। व्याघ्र के पीछे बायीं ओर परशुधारी-
कोटि की भाँति, "अर्द्धचन्द्रयुक्त ध्वज" अंकित है।

पृष्ठभाग में देवी गंगा "मकर" पर
बायीं ओर खड़ी कमरतक मंगी, साड़ी तथा कुण्डल, हार
भुजबन्ध गुणबन्ध और कंगन पहने हुए बायें हाथ में कमल
लिये है तथा दाहिना हाथ खाली है, बाईं ओर नाल सहित
अर्द्धचन्द्रयुक्त ध्वज अंकित है। इन मुद्राओं पर "व्याघ्र पराक्रम"
अथवा "राजा समुद्रगुप्त" लिखा मिलता है।

7. वीणाधारी सिक्के :→ वीणाधारी सिक्कों में भी दो
उप-प्रकार मिलते हैं। कुछ तो बड़े आकार वाले सिक्के हैं कुछ
छोटे आकार वाले हैं। बड़े आकार वाले सिक्के की तौल 111 ग्रेन
से 186 ग्रेन तक है। छोटे आकार वाले सिक्के 119 ग्रेन से
121 ग्रेन तक मिलते हैं। इस प्रकार की मुद्रा के अग्रभाग में
राजा गद्देदार पलंग पर हाथ में वीणा लिये है। धोती,
भुजबन्ध, हार पहने है। वृत्ताकार में महाराजाधिराज
"समुद्रगुप्त" लिखा है।

समुद्र की वीणावादन की निपुणता-
का वर्णन प्रयाग प्रशस्ति में भी मिलती है। इन मुद्राओं
से भी उसके संगीत प्रेम की व्यापकता का पता चलता है।
इस मुद्रा में देवी के बायें हाथ के कार्नुकोपिया के
अतिरिक्त शेष सभी चीजें भारतीय हैं। मुख्य भाग
में उत्कीर्ण वीणा से यह अनुमानित होता है कि-
पृष्ठ भाग में उत्कीर्ण आकृति संगीत की देवी
वीणावादिनी सरस्वती है।